दैनिक जागरण गया, 18 नवंबर 2014

विदेश नीति को संघवाद से जोड़ने की सलाह

● भारत की विदेश नीति पर आयोजित हुई कार्यशाला ● कार्यशाला में खुल कर बोले राजनीति विशेषज्ञ ● स्थानीयता से बनाया जाए संबंध

संवाद सहयोगी (गया नगर) : एक निजी होटल में सोमवार को 'भारत की अपने पड़ोसियों के प्रति विदेश नीति' पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला सेंटर फार पॉलिटीकल स्टडीज ,बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं इंडियन कांउसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स (आईसीडब्ल्यूए), नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई।

कुमाऊ विश्वविद्यालय नैनीताल से आए प्रो. मधुरेन्द्र कुमार ने कहा कि भारतीय विदेश नीति 1990 और 2001 की 9 /11 घटना के बाद ज्यादा जमीनी और यथार्थवादी हुई है। पड़ोसी देशों के साथ भू राजनीतिक मजबूरियां के अलावे अब भू आर्थिक परिदृश्य भी महत्वपूर्ण हो गए है। विदेश नीति को नई दिल्ली केन्द्रित न होकर स्थानीय और संघवादी नीतियों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। भारत को बाहरी दुनिया के वृहत्तर यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में अपनी पड़ोस नीति को व्यवस्थित करना पड़ेगा। पड़ोस की संकल्पना का अर्थ सिर्फ सार्क न होकर दक्षिण-पूर्व एशिया को भी लिया जाना चाहिए। इसे जनता के स्तर

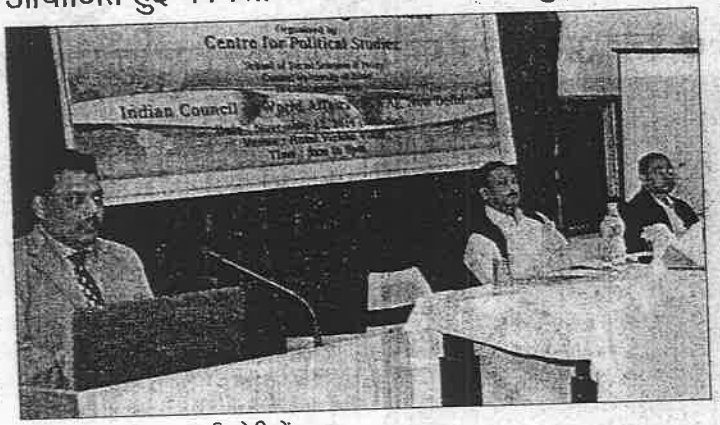

केन्द्रीय विश्वविद्यालय की गोष्ठी में वक्ता

सरोकारों से जोड़ कर पारंपरिक ज्ञान के आलोक में देखा जाना चाहिए। आईसीडब्ल्यूए से आए शोध अध्येता डा. अमित कुमार ने आईसीडब्ल्यूए के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए यथास्थिति वाद से बचने की सलाह दी। पड़ोस के आंतरिक सत्ता संबंधों में यथार्थ वादी विदेश नीति के संतुलन में प्रयोग में लाना होगा। कार्यक्रम के समन्वयक डा.आलोक कुमार गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए इसे विदेश नीति को जनता तक ले जाने का बेहतरीन प्रयास बताया। कार्यक्रम में प्रो. रामनंदन सिंह, डा. एहतेशाम खान, डा. मनोश सिन्हा एवं बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय से डा. कमलानंद झा, डा. कौशल किशोर, डा. योगेश प्रताप शेखर, डा. सुधांशु झा, डा.

गोष्ठी में भाग लेते छात्र-छात्राएं जागरण

अबोध कुमार, डा. ब्यूटी यादव, डा. अतीश दास, डा. कफील अहमद नसीम, डा. आशीष पाठक, डा. सुशांतो दास, डा. प्रणव कुमार, डा. सुमीत पाठक, डा. सुरेश कुरापति, डा. प्रशांत आदि मौजूद थे। इस मौके पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। विजेताओं को क्रमशः 3000, 2000, तथा 1000 रूपये का प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिया गया।

प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम

प्रथम-सलमा जफर एम.ए राजनीति शास्त्र

द्वितीय-अपूर्वाभूषण, बीए, तृतीय वर्ष राजनीति शास्त्र गया कॉलेज

तृतीय-ग्रिंस कुमार बीएलएलबी सीयूबी।

हिन्दुस्तान 18 नवंबर, 2014

विदेश नीति दिल्ली तक केन्द्रित न रहे : मधुरेन्द्र

गया | नगर प्रतिनिधि

- सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी और आईसीडब्ल्यूए के तहत कार्यशाला आयोजित
- 'भारत की अपने पड़ोसियों के प्रति विदेश नीति' पर हुआ व्याख्यान

भारत को अपनी विदेश नीति नई दिल्ली तक केन्द्रित न करके स्थानीय व संघवादी नीतियों के साथ इसे जोड़ा जाना चाहिए। सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, गया और इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स (आईसीडब्ल्यूए) द्वारा आयोजित कार्यशाला में कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल के प्रोफेसर मधुरेन्द्र ने ये बातें कही।

उन्होंने कहा कि भारत को बाहरी दुनिया के वृहत्तर यथार्थ को के परिपेक्ष्य में अपनी पड़ोस नीति को व्यवस्थित करना पड़ेगा। कहा कि पड़ोस की संकल्पना का अर्थ सिर्फ सार्क न होकर इसमें दक्षिण-पूर्व एशिया को भी लिया जाना चाहिए। 'भारत की अपने पड़ोसियों के प्रति विदेश नीति' विषय पर सोमवार को विष्णु विहार में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. अमित कुमार ने इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स के इतिहास के बारे में लोगों को जानकारी दी।

सोमवार को केन्द्रीय विश्वविद्यालय की कार्यशाला में शामिल शिक्षाविद् व छात्र।

निबंध प्रतियोगिता में सलमा जफर अव्वल

कार्यशाला के समन्वयक डॉ. आलोक कुमार गुप्ता ने इसे विदेश नीति को जनता तक ले जाने का बेहतरीन प्रयास बताया। तीन तकनीकी सत्रों में इस कार्यशाला का संचालन किया। दूसरे सत्र में इस विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें स्नातकोत्तर (राजनीति विज्ञान) द्वितीय वर्ष की छात्रा सलमा जफर को पहला, गया कॉलेज के स्नातक (राजनीतिक विज्ञान) के तृतीय वर्ष के छात्र अपूर्वा भूषण को दूसरा और सीयूबी के बीएबीए के छात्र प्रिंस कुमार को तीसरा स्थान मिला। विजेताओं को 3000, 2000 और 1000 रुपये पुरस्कार की राशि दी गयी। डॉ. सुधांशु झा, प्रणव कुमार, सुमित पाठक, मनीष सिन्हा, एहतेशाम खान, आलोक कुमार गुप्ता और प्रो. रामनंदन सिंह ने तकनीकी सत्र को संबोधित किया। इस अवसर पर डॉ. कमलानंद झा, कौशल किशोर, योगेश प्रताप शेखर, कफील अहमद नसीम, सुरेश कुरापति आदि मौजूद थे।

प्रभात खबर, 18 नवंबर, 2014

विदेश नीतियों पर हुआ मंथन

केंद्रीय विश्वविद्यालय ने आयोजित की कार्यशाला

संवाददाता, गया

होटल विष्णु विहार में सीयूबी व आइसीडब्ल्यूए की तरफ से विदेश नीति पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित शिक्षक व छात्र-छात्राएं.

बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से सोमवार को होटल विष्णु विहार में 'भारत की अपने पड़ोसियों के प्रति विदेश नीति' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी. यह कार्यशाला सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज और इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स (आइसीडब्ल्यूए) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गयी. कार्यशाला के प्रथम संबोधन में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनिताल से आये प्रोफेसर मधुरेंद्र कुमार ने कहा कि भारतीय विदेश नीति 1990 और 2001 की 9/11 के ज्यादा जमीनी और यर्थाथवादी हुई है. विदेश नीति में नयी दिल्ली केंद्रित नहीं हो कर स्थानीय और संघवादी नीतियों के साथ जोड़ा जाना चाहिए.

भारत को अपनी पड़ोस नीति को व्यवस्थित करना पड़ेगा. पड़ोस की संकल्पना का अर्थ सिर्फ सार्क ना होकर दक्षिण पूर्व एशिया को भी लिया जाना चाहिए. आइसीडब्ल्यूए से आये शोधकर्ता डॉ अमित कुमार ने आइसीडब्ल्यूए के इतिहास पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि पड़ोस के आंतरिक सत्ता संबंधों को हमें यर्थाथवादी विदेश नीति के संबंध में प्रयोग में लाना होगा. कार्यक्रम की शुरुआत में कार्यशाला के समन्वयक डॉ आलोक कुमार गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विदेश नीति को जनता तक ले जाने का बेहतरीन प्रयास बताया. कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मगध विश्वविद्यालय व पटना विश्वविद्यालय के संकायगण व छात्र-छात्राएं मौजूद थे. इनमें प्रमुख रूप से प्रो रामनंदन सिंह, डॉ एहतशाम खान, डॉ मनीष सिन्हा व बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय से डॉ कमलानंद झा, डॉ कौशल किशोर, डॉ योगेश प्रताप शेखर, डॉ सुधांशु झा, डॉ अबोध कुमार, डॉ ब्यूटी यादव व डॉ अतीश दास समेत कई अन्य मौजूद थे. कार्यक्रम के दौरान निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी. इसमें सलमा जफर को प्रथम, अर्पूवा भूषण को द्वितीय व प्रिंस कुमार को तृतीय स्थान मिला.